श्री. रामदरश मिश्र की कहानियों में पारिस्थितिक सजगता

****

डॉ.अंबिली.टी

****

मनुष्य और प्रकृति चिर सहचर रहे थे। पुराने ज़माने में मनुष्य प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग करते हुए उनकी सुरक्षा पर जागरूक था। लेकिन भूमंडलीकरण, बाज़ारवाद, उदारीकरण आदि के कारण मनुष्य प्रकृति से दूर होता जा रहा है। आज मानव पर्यावरण को भय भक्ति के साथ नहीं देखता। मनुष्यने प्रकृति को बिगाडा है, इसलिये सारा पारिस्थितिक संतुलन भी बिगड़ गया, जिसे बाढ़, सूख आदि रूपों में देखा जा सकता है। पर्यावरण प्रदूषण के विरुद्ध अनेक क्षेत्रों में आवाज़ उठाये गये। साहित्यके क्षेत्र में भी इसके सशक्त प्रतिरोध का स्वर हम सुन सकते हैं। हिन्दी कहानियाँ भी इसमें पीछे नहीं।

समकालीन कहानीकारों में श्री. रामदरशमिश्रका विशेष स्थान है। इन्होंनेनई कहानी के समयसे ही रचना यात्रा आरंभ की। परंतु वे इस नई कहानी आंदोलन से जुड़ नहीं पाये। आज़ादी के बाद गाँवों में जो परिवर्तन आया है, उसका यथार्थ चित्र इनकी कहानियों में मिलता है। मिश्रजी को कई गँवई अनुभव के साथ कस्बों और शहरों का अनुभव भी प्राप्त हुआ है। अत : उनका जीवन ही उनका साहित्य है, विशेषकर कहानियाँ। यथा वे कहते हैं-"मैंने अपनी कहानियों में और समूचे साहित्य में जिस चीज़ को बहुत महत्व देने की कोशिश की,वह है अनुभव और यह अनुभव मैं अपने परिवेश से खींचने की चेष्टा करता रहा।"1 मिश्रजी का जन्म उत्तर प्रदेश के गोरखपुर जिले के कछार अंचल में हुआ था।अतएव उनके जीवन का एक बड़ा हिस्सा ग्रामीण परिवेश में व्यतीत हुआ। इस परिवेश के प्रति आत्मसंबन्ध उनकी कहानियों में दर्शनीय है।

भारत की आज़ादी के बाद गाँव टूटने लगे। नौकरी की खोज में एवं शहरी चकाचौंध से आकृष्ट होकर लोग शहर की ओर भागने लगे। पर वहाँ की स्वार्थवृत्ति और खोखलेपन को देखकर उनका मन वापस गाँव की ओर खिंचता है। 'छूटा हुआ नगर', 'चिट्ठियोंके बीच', 'माँ सन्नाटा और बजता हुआ रेडियो ' आदि कहानियों में ऐसे लोगों का सजीव चित्रण हुआ है। 'एक और यात्रा' के डाक्टर साहब दिल्ली की चकाचौंध से ऊबकर गाँव आना चाहते हैं। अपने गाँव और अपने खेत के प्रति आत्मीयता 'एक औरत एक ज़िन्दगी' में भी देखी जा सकती है। भवानी बहू त्रिवेणी से ही अधिक श्रेष्ठमानती है अपनी खेती और सेवन्ती नदी को।

हमारा पूरा जलवायु शहरीकरण की प्रक्रिया से प्रभावित रहता है। भारत जैसे कृषि प्रधान देश में मौसम के बिगड़ने पर बरसात नहीं होती है। अकाल पड़ सकता है। सारी खेती मिट्टी में मिल जाती है। भारतीय किसानों के सपने टूट जाते हैं। मिश्रजी की कहानी 'माँ सन्नाटा और बजता हुआ रेड़ियो' अकाल से पीड़ित गाँव की हृदयस्पर्शी कहानी है। अकाल के कारण खेती सूख गयी है। लोग भूख के कारण मर रहे थे। गाँव में सन्नाटा है। 'कहानी का प्लाट और खलिहान ' कहानी में ऐसे मनुष्यों का चित्रण है, जो भूख मिटाने के लिये पेड़ की छाल खाता है और पशुओं के गोबर में से अन्न के दाने निकालके खाना बनाकर खाते हैं। पक्षी पटपटाकर खेतों के ऊपर उड़ते हैं और छोटे छोटे पक्षियोंको मारकर पेट की आग बुझाते हैं।

'माँ सन्नाटा और बजता हुआ रेडियो ' में मिश्रजी ने अकाल से पूर्व और बाद के खेत की दशा का चित्रण किया है। अकाल के पूर्व का चित्रण इस प्रकार हैः- 'इस रास्ते, मैं कई बार आया हूँ, इस मौसम में, तब खेत तरह तरहकी फसलों से भरे रहते थे। बागर पर के खेतों में अरहर की फसल लपसती रहती थी, किसानों से रास्ते बजते रहते थे। गाँव की लड़कियाँ और स्त्रियाँ हँसती हुई खेत में उतराई रहती थीं।'2-इस यादसे ही मिश्रजी पुलकित हो उठते हैं। अकाल के बाद का दर्दनाक चित्रण देखियेः- 'लेखकमाँ के क्रिया कर्म के लिये गाँव आया है। गाँव में अकाल

पड़ा है। न पशुओं को चारा मिलता है न मनुष्य को भोजन। '3 अकाल के कारण लेखक ज़मीन बेचकर पिताजी को अपने साथ शहर ले जाना चाहता है। परंतु पिताजी कहते हैं कि 'राम् राम्, कैसी बात करते हो बेटा?पुश्तैनी चीज़ है, कहीं बेची जातीहै।'4 यहाँ अपनी ज़मीन के प्रति पिताजी की रागात्मकता दर्शनीय है।

भारत के ग्रामीणों का जीवनमुख्यतः खेती पर चलता है। खेती के लिये वर्षा चाहिये।पर भारी वर्षा से बाढ़ आती है। बाढ़ आने पर खेत बह जाते हैं, फसल नष्ट होती है, मकान टूट जाते हैं। पानी में जानवर बह जातेहैं।गाँवों में गंदगी एवं रोग फैल जाते हैं। मिश्रजी की 'बाढ़' कहानी में इन सबका चित्रण है। 'एक औरत एक ज़िंदगी' में बाढ़के कारण जो विनाश होता है, उसका मार्मिक चित्रण है,यथाः-'भवानी असहायहोकर देखती रह जाती है। बाढ़ में नरेश द्वारा बनवाये आधे मकान की दीवारें टूट टूटकर ढहने लगी,छत भहराने लगी। बच्चा और बच्ची को लिये खड़ी भवानी --------चारों ओर गरजती सीमाहीन बाढ़--------ऊपर खुले आकाश से टूटता हुआ मेघ, सीमाहीन दिशाओं की ओर ताकती भवानी------दीवारें टूटकर गिर रही थी। पुश्तैनी लड़कियाँ जो मकान में लगी थीं, भहरा रही थीं और भवानी बच्चों को लिये सब देख रही थी घुंघट उठाए हुए। '5 यहाँ अपने बच्चों के साथ प्राकृतिक संकट से जूझने के लिये तैयार होनेवाली भवानी का चित्र है।

'चिट्ठियों के बीच' कहानी के डॉ. देव अहमदाबाद में प्राध्यापक हैं। उन्हें गाँव से चिट्ठी आयी है। चिट्ठी में लिखा हैः- 'बाढ़ आयी है, खेत बह गये हैं, मकान गिर गया है,ठंडक से बैल मर गये हैं। सारे गाँव एक ठंडी छाया झुकी हुई है, गलियों में कुत्ते रोते हैं, रातें भूँकती हैं, दिन उदास आता है, बिना बोले चला जाता है।'6

मिश्रजी को पढ़ाई के लिये गाँव से शहर जाना पड़ा था। अतः उनका संपर्क महानगरीय जीवन से भी हो गया। वहाँ उन्होंने देखा कि पर्यावरण प्रदूषण से लोगों का स्वास्थ्य बिगड़ता जा रहा है। यह देखकर मिश्रजी अत्यंत दुःखी हुए। अपनी कहानियों में उन्होंने इस मनोदशा को प्रकट किया। एक 'अधूरी कहानी ' में

अहमदाबाद की एक गंदी चाल का यथार्थ चित्रण है। उस चाल में ज़्यादातर यू.पी और बिहार के लोग रहते थे। कुछ गुजराती भी थे। उसमें जगह जगह गोश्त की दूकानें थीं।उसके चारों ओर चील और कौए मंडराते रहते थे। सड़क पर हड्डियाँ बिखरी पड़ी थीं। कहीं कहीं छोटे बच्चे पाखाने के लिये बैठे होते थे। वहाँ की गलियाँ गंदगी से भरी रहती थीं। गलियाँ तंग थीं। इसलिये उनमें निकलना मुश्किल था। इस मुहल्ले के एक ओर खाली खुला मैदान था, जिसमें पशुओं की लाशें सड़ती रहती थीं और म्युनिसिपैलिटी द्वारा फेंके गये कूडे कचरे की दुर्गंध भभका मारती रहती थी। ऐसी गंदी बस्ती में रहें तो मनुष्य का स्वास्थ्य भी बिगड़ जाएगा।

'मुर्दा मैदान' कहानी में भी शहर की गंदगी का यथार्थ चित्रण हैः- 'हाँ यह शहर की दुर्गंधशाला है। दूर दूर तक खाली मकान में सैकड़ों जानवरों के नये पुराने मुर्दे पड़े हैं, उनके कंकाल, उनकी टूटी फूटी हड्डियाँ बिखरी हुई हैं। ट्रकों में लदलदकर शहर का कूड़ा आता है और हवा के ऊपर अपनी शीलन भरी दुर्गंध लादकर मीलों बिखेर देता है। जगह जगह गन्दे गड्ढ़ों में काई भरा पानी जमा है, जिसके किनारे किनारे अनेक लोग नंगे बैठे हुए हैं। '7 इस कहानी में अनेक स्थानों पर गंदगी का चित्रण मिलता है। लोहे के टुकडे के लिये झगड़नेवाले बच्चोंका चित्र, गंदगी के लिये आपस में लड़नेवाले सुअरों का चित्र, नये फेंके गये घोडे की लाश के लियेलड़नेवाले गिद्दों का चित्र, मांस के लिये शोर मचानेवाले कौए का चित्र आदि दर्शनीय हैं।

ध्वनि प्रदूषण मानव जाति के लिये अत्यंत हानिकारक सिद्ध हुआ है। यह रक्तचाप, कर्णबधिरता, बेचैनी, सरदर्द, चिडचिडाहट, निद्रानाश जैसी बीमारियों को आमंत्रित करता है। मिश्रजी ने अपनी कहानियों में ध्वनि प्रदूषण की भी समस्याओं की सजीव चर्चा की है। 'सवेरे-सवेरे' कहानी के व्यास साहब सबेरे घूमने निकले थे कि अचानक उन्हें किसी बच्चे के रोने की आवाज़ सुनायी दी। इसका चित्रण ऐसा हैः- 'उन्होंने चौंककर इधर उधर देखा तो एक कार फर्याटे से बगल से मुझे छूती हुई निकल गयी(ज्ञात हुआ) उसी का हार्न है, जो रोते बच्चे की तरह बज रहा है। बड़ी

कोफ्त हुई। इस उल्लू के पट्ठे को हार्न में भरने के लिये बच्चे के रोने की ही आवाज़ मिली।'8 इसी कहानी का चौदह पन्द्रह साल का एक लड़का हमेशा बड़ी तेज़ी से मोटर साइकिल चलाता है। यह कईलोगों को घायल भी कर चुका है। कहानी का नायक उसे कई बार डाँट भी चुका है। यह लड़का 'ऊँट सा मुँह उठाए इस गली, उस गली मोटर साइकिल तेज़ी से दौडाता रहता है। मोटर साइकिल का साइलैंसर निकाले हुए हैं, इसलिये यह भयानक शोर उगलती रहती है।'9 आज लोग तो ताज़गी के लिये सबेरे सबेरे घूमने निकलते हैं, लेकिन उनको मिलता है परेशान करनेवाला शोर और धुआँ।

ध्वनि प्रदूषण का दूसरा रूप है पटाखें। 'एक कहानी लगातार' में मिश्रजी कहते हैं- 'पटाखें नई पीढ़ी की संस्कृति बनते जा रहे हैं। जन्म पर पटाखें, वर्षागाँठ पर पटाखें, शादी-ब्याह पर पटाखें, दशहरे पर पटाखें, दीपावली पर पटाखें, होली पर पटाखें, खेलों में जीत पर पटाखें, पटाखें-पटाखें, विषैला धुआँ उठ रहा है, कान के पर्दे फट रहे हैं, मकानों- दूकानों में आग लग रही है, बच्चों के शरीर झुलस रहे हैं। थोडे आनंद के लिये आसपास के लोगों का सुख चैन हराम कियाजा रहा है। बीमार व्यक्तियों की बेचैनी के भीतर खौलता हुआ शोर उंडेला जा रहा है। काम से थके जवानों और वृद्धों की नींद छिन्न भिन्न कर दी जा रही है।'10

'पटाखें' शीर्षक में ही एक कहानी है, जिसकी औरत बीमार है।रात के साढ़े बारह बजने पर भी गली के आवारा लड़के पटाखें फोड़ रहे हैं। औरत का पति उन्हें डाँटता है तो एक लड़का कहता हैः-'ऐ बुड्डे, यह सड़क तुम्हारी नहीं है, यह सबकी है। हम जो चाहें, करेंगे। त्योहार के दिन पटाखों के साथ खुशी नहीं मनाएँगे तो क्या मातम मनाएँगे? अभी तो हम जवान हैं। '11 वास्तव में पटाखे चलानेवालों पर यहाँ कोई कार्यवाई नहीं होती।

माइक की आवाज़ से भी ध्वनिप्रदूषण बढ़ता है। यह हमारी नींदको हराम करता है। हम अपने ही घर में एक दूसरे से संवाद नहीं कर पाते। लेखक का कहना है

कि जहाँ देखो, वहाँ माइक पर चिल्लातेरहते हैः- 'मंदिर में माइक, मसजिद में माइक, गुरुद्वारे में माइक, जगराता में माइक,शादी में माइक, मरण में माइक, दूकान में माइक------माइक और इसके भोंडे आघात से छटपटाता जीवन का सुख चैन, आम आदमीका सुकून। '12'मैया मैंनूँ लाल बख्शी दे ' कहानी के चंपतलाल के यहाँ देवी का जागरण हो रहा हैः- 'गली पवित्र गीतों से गूँज रही है। गायक भक्तों की बहुत महंगी व्यवसायिक मंडली आयी हुई है। फिल्मी तर्ज पर बने हुए भक्तिगीत उनके सोमरस सिद्ध कंठों से फूट रहे हैं और पूरी गली के लोगों की नींद को रौंद रहे हैं। इम्तहान की तैयारी करते छात्र माथा पीट रहे हैं, दिन भर की मज़दूरी से टूटी हुई देह तड़प रही है, बुखार में तपते हुए लोग छटपटा रहे हैं। '13 धर्म के नाम पर चलनेवाला यह शोर शराबा कभी कभी किसी का जान भी ले लेता है। 'मैया मैंनूँ लाल बख्शी' कहानी का छोटा बच्चा कई दिन से बीमार था। रात को बुखार तेज़ हो गया।बेचैनी से वह रात भर कहता रहाः- 'पिताजी, इस ज़ोर को बंद कराइए न। बड़ी बेचैनी हो रही है। '14 पर पिताजी इस शोर को बंद नहीं करवा सके। बच्चा तड़प तड़पकर मर जाता है।लेखक कहते हैं कि लाउड स्पीकर पर भजन गाने से देवी कभी भी प्रसन्न नहीं होती। इससे तो ध्वनि प्रदूषण बढ़ता है।

मिश्रजी आगे कहते हैं कि 'ध्वनि प्रदूषण को नियंत्रित करने के लिये टी.वी पर प्रोग्राम दिखाये जाते हैं। फिरभी पटाखें और माइक उसी उन्माद से चीखते रहेंगे, वाहन बेतहाशा धूल और धुआँ उडाते भागते रहेंगे, नव धनाढ्यों के बिगडैल लड़के साइलैंसर निकालकर अपनी चीखती मोटर साइकिलें बेतहाशा भगाते रहेंगे, उनकी कारों में से तरह- तरह के बेहूदे हॉर्न बजते रहेंगे-----और न जाने क्या क्या होता रहेगा।'15 मिश्रजी की राय में इसका इलाज टी.वी नहीं, कानून का पालन होना चाहिए। अर्थात् ध्वनि प्रदूषण को नियंत्रित करने केलिए समाज में जागृति की आवश्यकता है।

शहरों में गंदी बस्तियोंके कारण वातावरण में दूषित वायु फैल जाती है। ऐसे दूषित वातावरण में मच्छर तेज़ी से बढ़ते हैं। मच्छरों के कारण बीमारी को खुला निमंत्रण मिलता है। गन्दगी के कारण वायु प्रदूषण बढ़ता है। सफाई का काम नगरपालिका काही कर्तव्य नहीं, हमारा भी कर्तव्य है।

'गोहत्या' कहानी सड़कों पर फैल रही गन्दगी की ओर हमारा ध्यान आकर्षित करती है। लोगों को गाय के मूत्र और गोबर से प्रदूषण नज़र नहीं आता। यथा कहानीकार कहते हैं- 'गाय के गोबर को भी लोग पवित्र मानते हैं, इसलिये सड़क पर बिखरे हुए गोबर से किसी को शिकायत नहीं थी। अभी इस मुहल्ले में सफाई की कोई व्यवस्था नहीं थी, अतः फैले या फैलते हुए गोबर से दुर्गंध उठती थी। '16 धार्मिक आस्था के कारण यहाँ वायु प्रदूषण बढ़ता है।

पान या तंबाकू का सेवन करनेवालों को उचित या अनुचित का कोई ध्यान नहीं। 'सवेरे- सवेरे' कहानी में इसका प्रभावशाली चित्रण है। कोई मज़दूर "खँखारकर ढेर सारा बलगम"17 लेखक के घर के सामने फेंक देता है। इसी प्रकार शहरों के खाली प्लॉट में लोग कूडा-कचरा डालते हैं। ऐसे प्लॉटों से दुर्गंध आती है। तब आसपास के लोगों का जीवन दूभर हो जाता है। 'पराया शहर' कहानी में कारखानों की चिमनियोंका वर्णन करते हुए मिश्रजी ने लिखा हैः- 'आकाश में उठी हुई चिमनियाँ ही, चिमनियाँ, बल खाता हुआ धुआँ।'18

मिश्रजी की अन्यकहानियों में भी परिस्थिति के प्रति लगाव हम देख सकते हैं। 'खाली घर' में गंगा नदी को मोक्षदायिनी मानकर उसमें नहाना पुण्यकर्म माननेवाले लोगों का चित्रण है। 'एक इंटर्व्यू उर्फ कहानी तीन शुतुर्मुर्गों की' में हंस, कौआ और शुतुर्मुर्ग मनुष्यों जैसा बातें करते हैं। इस कहानी में विभिन्न प्रकार के पक्षियों एवं मछलियों का विवरण है। 'ज़मीन' कहानी में ज़मीन पर सबका समानाधिकार है- इसकी चर्चा हैः- 'यह ज़मीन सबकी है, पानी सबका है, ईश्वर ने सबको एक सा बनाया है, लेकिन आदमी ने बंटवारा कर लिया। अपने ज़मीन को ज़मीन से, पानी

को पानी से और आदमी को आदमी से बाँट दिया।इस बँटवारे में किसी के हाथ कुछ लग गया, किसी के हाथ में कुछ भी नहीं।'19

'मंगलयात्रा', 'अकेला मकान', 'अभिशप्तराग' आदि कहानियों में अंधविश्वासों का चित्रण है।'होली' कहानी में होली त्योहार का और 'एहसान' कहानी में नागपंचमी का चित्रण है। मिश्रजी ने प्रकृति से अनेक प्रतीकों को भी लिया है। 'खंडहर की आवाज़' कहानी में आदमी के प्रतीक बादल न जाने कितने रूप धारण करते हैं। कहानियों के शीर्षकों में भी प्रतीकात्मकता का निर्वाह किया गया है, जैसे 'पिंजडा', 'सर्पदंश', 'पशुओं के बीच' आदि।'उत्सव' कहानी में बिंबों के माध्यम से प्रकृति का चित्र उभारा गया है। इन कहानियों में लोकभाषा, लोकोक्ति और मुहावरों का भी कई प्रयोग मिलता है।

संक्षेप में कहा जा सकता है कि रामदरशमिश्र की कहानियों में परिस्थिति से छूटे जा रहे मानव का चित्र है। प्रदूषण से आहत पर्यावरण का चित्रण है। पर्यावरण का, प्रदूषण से बचाव ही कहानीकार की चिंता का मुख्य विषय है। अतः निस्संदेह कहा जा सकता है कि पारिस्थितिक सजगता की दृष्टि से मिश्रजी की ये कहानियाँ उच्चकोटी की हैं।

<u>संदर्भ-संकेत</u>

1. रामदरशमिश्र-भूमिका-"मेरी प्रिय कहानियाँ"
2. "मेरी लोकप्रिय कहानियाँ"-पृ 23
3. "मेरी लोकप्रिय कहानियाँ"-पृ 24
4. "मेरी प्रिय कहानियाँ"-पृ 31
5. "खाली घर"-पृ 154
6. "खाली घर"-पृ 30
7. "मुर्दा मैदान"-पृ 50

8. “एक कहानी लगातार”- पृ113
9. “एक कहानी लगातार”-112
10.“एक कहानी लगातार”-पृ17
11.“एक कहानी लगातार” पृ116
12.“एक कहानी लगातार” पृ118
13.“एक कहानी लगातार” पृ 16
14.“एक कहानी लगातार” पृ18
15.“एक कहानी लगातार” पृ 119
16.“एक कहानी लगातार” पृ 48
17.“एक कहानी लगातार” पृ110
18.“वसंत का एक दिन” पृ 46
19.“मेरी प्रिय कहानियाँ” पृ 157

DR.AMBILI.T
ASSISTANT PROFESSOR
DEPT OF HINDI
GOVT COLLEGE CHITTUR
PALAKKAD, KERALA
PIN-678104